5

मूर्तिपूजकों की उपासना

हमारी यह समझने में सहायता करके कि परमेश्वर क्या नहीं चाहता और वह आराधना में मनुष्य की खोजों को स्वीकार क्यों नहीं करता, मूर्तिपूजकों की आराधना पर चर्चा करने से हमें सच्ची आराधना की प्रकृति और मादण्डों का पता चलता है। सच्ची आराधना से दूर करने वाली चीज़ों में मूर्तिपूजा भी थी।

> प्राचीन समयों में मूर्तिपूजा में सच्चे धर्म से दूर जाने के दो रूप थे: नकली देवताओं की पूजा, चाहे वह मूर्तियों के माध्यम से हो या किसी और से; और मूर्तियों के माध्यम से परमेश्वर की आराधना।[1]

मूर्तियों की पूजा उपासना है। यदि परमेश्वर को हर तरह की उपासना स्वीकार्य है तो मूर्तिपूजा में कोई बुराई नहीं होनी चाहिए। निश्चय ही, मूर्तियों को नकारा जाना चाहिए क्योंकि वे वह वास्तविक देवता नहीं हैं; पर क्या सच्चे परमेश्वर की उपासना में मूर्तियों का इस्तेमाल उसे स्वीकार्य है ? यदि परमेश्वर केवल इतना ही चाहता है कि लोग उसकी उपासना करें तो क्या परमेश्वर की मूरत बना लेने में कोई बुराई है ? परमेश्वर ने समझाया कि आराधना में मूर्तियों का इस्तेमाल क्यों नहीं होना चाहिए:

> इसलिये तुम अपने विषय में बहुत सावधान रहना। क्योंकि जब यहोवा ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच में से बातें की तब तुम को कोई रूप न देख पड़ा, कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, चाहे पृथ्वी पर चलनेवाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़नेवाले किसी पक्षी के, चाहे भूमि पर रेंगनेवाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहनेवाली किसी मछली के रूप की कोई मूर्त्ति खोदकर बना लो (व्यवस्था विवरण 4:15-18)।

परमेश्वर की आराधना में मिट्टी की मूर्तियों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वह भौतिक जीव नहीं हैं। आराधना में अपने प्रतिनिधित्व के लिए वह मूर्ति के इस्तेमाल को नकारता है वह आत्मा है (यूहन्ना 4:23, 24) और उसके भौतिक होने की बात सोची भी नहीं जा सकती।

अब्राहम और उसका समय

यहोशू ने पूर्तिपूजकों की उपासना से जुड़ी आरम्भिक बाइबल की बातों की ओर संकेत किया ''कि प्राचीन काल में इब्राहीम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे'' (यहोशू 24:2)। बाइबल में तो इन देवताओं

की प्रकृति नहीं बताई गई, पर मेसोपोटामिया के सुमेरी लोगों के प्राचीन दस्तावेजों से इसका पता चलता है, जहां नाहोर और अब्राहम रहते थे।[2]

अब्राहम मूर्तिपूजकों की इस पृष्ठभूमि में से बाहर आ गया जिसमें उसके अपने रिश्तेदार भी मूर्तियों की पूजा करते थे। हो सकता है कि वह ऊर से निकलने से पहले बाहरी देवताओं की उपासना न करता हो; यदि करता था तो एक सच्चे परमेश्वर की आराधना आरम्भ करने पर उसने वह सब छोड़ दिया।

याकूब और राहेल

कइयों का मानना है कि राहेल का अपने पिता के गृहदेवताओं अर्थात मूर्तियों को ले जाना (उत्पत्ति 31:19, 30-35) इस बात का संकेत है कि वह और शायद याकूब भी उनकी उपासना करते थे। शायद यह सही नहीं है।

> राहेल के मन में अपनी जवानी के समय के धर्म के लिए लगाव अभी भी होगा, पर यह सम्भावना अधिक है कि उसके लिए केवल धार्मिक नहीं बल्कि गृहदेवता का कानूनी या धार्मिक मूल्य था। नूज़ी सामग्री से यह संकेत मिलता है कि जिसके पास गृहदेवता होते थे वह परिवार की सम्पत्ति का हकदार होता था ... यदि याकूब के वहां रहने के समय लाबान के कोई पुत्र हुए तो वे प्रतिमाएं उनकी होनी थीं। राहेल अपनी सम्पत्ति के लिए यह सब पाना चाहती थी।[3]

प्रतिमाएं अपने पास रखने का धार्मिक के बजाय कानूनी कारण अधिक होगा। राहेल द्वारा उन प्रतिमाओं को अपने साथ ले जाना यह साबित नहीं करता कि वह उनकी मूजा करती थी।

याकूब द्वारा खम्भे खड़े करना (उत्पत्ति 28:18, 22; 31:13; 35:14) यह साबित नहीं करता कि उसने उनकी पूजा की। यह खम्भे निश्चित जगहों पर हुई घटनाओं (उत्पत्ति 31:44-52; निर्गमन 24:4) के स्मारक (उत्पत्ति 35:20; 2 शमुएल 18:18) या यादगार थे।

याकूब के साथ के कुछ लोगों के पास मूर्तियां थीं। उसने उन्हें अपनी-अपनी मूर्तियों को निकाल फेंकने के लिए कहा और उन्हें छुपा भी दिया (उत्पत्ति 35:2-4)। उसके कामों से पता चलता है कि उसने कभी मूर्तियों को मान्यता नहीं दी जो इस बात का संकेत हो सकता है कि उसने कभी उनकी सेवा नहीं की।

मिस्र में इस्राएली

मिस्र में 430 वर्ष के अपने वास के दौरान हो सकता है कि इस्राएलियों ने मूर्तिपूजा की हो। यहोशू 24:14 और यहेजकेल 20:5-8 से इसका संकेत मिलता है।

मिस्र के लोग सर्वेश्वरवादी थे जो राष्ट्रीय, स्थानीय और व्यक्तिगत हर प्रकार के देवताओं को मानते थे। प्राचीन आकृतियों और मूर्तियों से पशुओं, मनुष्यों, पशुओं के सिर वाले मनुष्यों के रूप में कई देवताओं का पता चलता है। सूर्य, चांद, वायु और नील नदी को देवता माना जाता था। लगभग हर बड़े बाहरी प्रभाव जैसे प्रजनन, वर्षा, वायु, आग, विपत्तियां, यहां तक कि बिच्छुओं, कोब्रा और मगरमच्छ को भी देवता माना जाता था। मिस्र पर परमेश्वर द्वारा डाली गई विपत्तियों से

मिस्र के देवताओं से परमेश्वर के ऊपर होने को दिखाया गया (निर्गमन 12:12)।

कइयों का मानना है कि हारून ने इस्राएलियों को पूजा करने के लिए बछड़ा बनाने में मिस्त्रियों की नकल की थी (निर्गमन 32:1-5) इस्राएल के दस गोत्रों को दो बछड़ों की मूर्तियां बनाने के लिए (1 राजाओं 12:26-33) मिस्र में अपने वास के दौरान यारोबाम भी प्रभावित हुआ होगा (1 राजाओं 11:40)। इन मान्यताओं की पुष्टि के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

इस्राएलियों के पड़ोसियों में पाई जाने वाली मूर्तिपूजा

कनानी

मिस्र से निकलने और चालीस साल तक जंगल में घूमने के बाद इस्राएली मूर्तियों से भरे देश कनान में दाखिल हुए। यह जानते हुए कि उसके लोग मूर्तियों की पूजा से प्रभावित हो जाएंगे, परमेश्वर ने यह चेतावनी दी:

> उनके देवताओं को दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना, और न उनके से काम करना, वरन उन मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर डालना, और उन लोगों की लाटों के टुकड़े टुकड़े कर देना। और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना (निर्गमन 23:24, 25क)।

> ऐसा न हो कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएं; क्योंकि यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे, तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा (निर्गमन 23:33ख)।

वाचा, दस आज्ञाएं (व्यवस्थाविवरण 4:13), इस्राएलियों को किसी अन्य देवता को मानने से रोकती थीं (निर्गमन 20:3; व्यवस्थाविवरण 5:7)। परमेश्वर की उनकी आराधना अपने आस पास की मूर्तिपूजक जातियों की प्रथा की नकल करके नहीं होनी थी (व्यवस्थाविवरण 20:17, 18)।

कनान में प्रवेश करने के बाद यहोशू तथा उसके अधीन सेवा करने वाले प्राचीनों की अगुआई में इस्राएलियों ने बहुत अच्छा किया (न्यायियों 2:7)। उस समय हो सकता है कि लोगों ने मूर्तियों की सेवा की हो (यहोशू 24:20, 23), पर यहोशू के बाद की पीढ़ियां अन्य देवताओं की काफ़ी सेवा करने लगीं (न्यायियों 2:10-13)। यह विशेष तौर पर तब सही था जब इस्राएलियों की अगुआई करने वाला न्यायी धर्मी न हो (न्यायियों 2:16-19; 10:5, 6)।

बहुदेववादी होने के कारण कनानी जातियां कौमी देवताओं के साथ-साथ कई छोटे-छोटे देवताओं को मानती थीं। इन जातियों में यह प्रथा आम थी कि अपने देवताओं के साथ वे उनके देवताओं को भी मिला लेते थे, जिन्होंने उन्हें पराजित किया था। अपने देवताओं को छोड़े बिना वे जीतने वालों के देवताओं को भी अपना लेते थे। उनका तर्क होता था कि जीतने वालों का देवता अवश्य ही उनके देवताओं पर भारी होगा, वरना वे पराजित न होते।

इस्राएलियों के कनान में प्रवेश करने के बाद कनानी लोगों के देवता इस्राएलियों के लिए फंदा बन गए। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी कि कनान के सब लोगों को मार डालें, उनकी मूर्तियां नष्ट कर दें, और उनसे विवाह करने से दूर रहें (व्यवस्थाविवरण 7:1-5)। इसके

दो कारण हो सकते हैं: (1) उनके साथ संगति इस्राएलियों को मूर्तिपूजा में ले जा सकती थी (व्यवस्थाविवरण 7:3, 4), और (2) इस्राएलियों पर वे बीमारियां आ सकती थीं जो मिस्रियों पर पड़ी थीं (व्यवस्थाविवरण 7:15) जिन्होंने कनानियों को अपनी कामुक प्रथाओं के कारण अपनी लपेट में ले लिया था।

अश्शूरी लोग

इस्राएलियों विशेषकर उत्तरी गोत्रों के लिए अश्शूरी लोग जिन पर विजय पाकर वे पूरे अश्शूर में फैल गए थे, खतरा बन गए। तिगलतपिलेसर तृतीय ने 730 ई.पू. के निकट गलील पर हमला कर इस्राएल, उत्तरी राज्य, यहूदा और दक्षिणी राज्य को कर देने के लिए विशेष किया। एक दशक के बाद सारगन तृतीय ने इस्राएल की राजधानी सामरिया पर कब्ज़ा कर करके अधिक समृद्धि और सक्षम लोगों को साथ ले जाकर उनकी जगह विदेशी कालोनियां बसा दीं।

अश्शूरियों का धर्म सर्वेश्वरवादी था और बहुत करके बेबिलेनियों के धर्म जैसा था। अपने प्रमुख और राष्ट्रीय देवता अश्शूर के अलावा उनके और भी बहुत से देवता थे, जिनके बारे में वे मानते थे, प्रकृति के हर पहलू पर उनका नियन्त्रण है। उनके देवता मछुआरों, फूल उगाने वालों, चरवाहों और अन्य किसानों को सहायता करने वाले माने जाते थे। पुजारी और ओझा भविष्य बताने वाले और मन्दिर के कर्मकाण्डों की सेवा करने वाले होते थे, जिसमें बलियां चढ़ाना, भजन गाना, प्रार्थना करना और विलाप करना शामिल था। कई स्त्रियां प्रजनन के समाराहों में भाग लेतीं और विलाप करने तथा स्वप्नों का अर्थ बताने का काम करती थीं।

बाबुल वासी

597 ई.पू. में इस्राएल बाबुल के अधीन आ गया। बेबिलोनियों ने कई यहूदियों को बाबुल में भेज दिया, जहां दासता में रहते हुए उनकी मूर्तिपूजा छूट गई।

बाबुलवासियों और अश्शूरियों का सर्वेश्वरवादी धर्म सुमेरियों से लिया गया था। बाबुल का राष्ट्रीय देवता मरदोक था (यिर्मयाह 50:2) जो अश्शूरियों के अश्शूर देवता की तरह ही था। इन जातियों के और भी देवता थे, जिन्हें वे मानते थे, उनके वश में उनका जीवन है। वे भूतों पर भी विश्वास करते थे, जिन्हें निकालने की शक्ति उनका मानना था कि उनके पुजारियों में है। कई पुजारी संगीत और विलाप के साथ देवताओं के क्रोध को दूर करने के लिए विशेष कार्यक्रम करते थे। जानवरों की बलियां दी जातीं और उनका लहू बहा दिया जाता; परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उन बलियों को जला दिया जाता है। उनके प्रमुख पर्वों में से एक नये वर्ष का जश्न होता था। पुजारिनें कई तरह के काम करती थीं। कइयों के लिए साध्वी का जीवन बिताना आवश्यक होता था जबकि अन्य मन्दिर की वेश्याओं के रूप में काम करती थीं। कई जगहों का इस्तेमाल हो सकता था, पर मन्दिर उपासना के सब से महत्वपूर्ण स्थान थे।

सारांश

अब्राहम और उसकी संतान जहां भी रहे, उनके आस-पास मूर्तियों की पूजा करने वाले रहे ही। कनान देश मूर्तिपूजा से परेशान था। एक सच्चे परमेश्वर का वफादार बने रहना इस्राएलियों के

लिए एक बड़ी चुनौती बन गई। अपने आस-पास की जातियों की तरह, इस्राएली भी कई बार अपने राष्ट्रीय देव उनके मामले में यहोवा की उपासना के साथ अन्य देवताओं को मिला लेते। जैसे कोई आदमी सर्दी को ठण्डी रात में अपने आपको गर्म रखने के लिए कम्बल जोड़ लेता है, वैसे ही इस्राएलियों ने देवता जोड़ लिए। उन्होंने यह मूर्तिपूजक सोच अपना ली कि जितने अधिक देवताओं की पूजा करोगे उतनी ही अधिक सहायता मिलेगी।

दासता से पहले, यहूदी कई बार अपने आस पास की जातियों के देवताओं की पूजा करते थे। बाबुल की दासता के बाद, अपने देश लौट आने वाले बचे हुए लोग और यहूदा के रहने वालों ने मसीह के आने के समय तक अपने आप को मूर्तिपूजा से दूर रखा।

टिप्पणियां

[1]स्टीवन बाराबस, ''आईडोलेटरी,'' इन *द न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल,* एडि. जे. डी. डग्लस एंड मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1987), 3:459. [2]सुमेरियों के कर्म जो मुख्यतया सर्वेश्वरवादी थे, इस अवधारणा पर थे कि नगर का अपना एक देवता था, जिसकी कई अन्य देवताओं द्वारा सहायता की जाती थी। उनके देवताओं को मन्दिरों में रखा जाता और उन्हें कीमती कपड़ों से सजाया जाता। प्रतिदिन के भोज भेंट चढ़ाए जाते, बलिदान दिए जाते, गाकर बहलाया जाता और सन्तान के समुदायों का कामुक कर्मकाण्ड करते हुए मन्दिर के नर और मादा वेश्याओं द्वारा उनकी उपासना की जाती। यहेजकेल 8:14 में उल्लेखित तम्मूज वनस्पति का देवता था। लोगों का विश्वास था कि गर्मियों में वनस्पति के खत्म हो जाने और वर्षा ऋतु में फिर से उगने के कारण वह मर गया था। गर्मियों में उसे अगवा कर लिया गया और फिर वर्षा ऋतु में वह वापस आ गया। जब गर्मियों की चमचमाती धूप ने वनस्पति सुखा दिया, स्त्रियां उसके नरक में चले जाने का वार्षिक शोक मनातीं। कइयों को लगता था कि वह दोबारा कभी नहीं आएगा, जबकि कइयों का मानना था कि वनस्पति के फिर से उग आने पर वह हर वर्षा ऋतु के बाद आ जाता है (*दि इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया* संशो. संस्क., सम्पा. ज्योफरी, डब्ल्यू ब्रोमिले [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988], 4:660, 726) में फ्रांसिस आर. स्टील, ''सुमेर'' एण्ड पी. डब्ल्यू, गेबलेन, जूनि., ''तम्मूज।'' [3]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* रैव., एडि. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रामिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:797 में पॉल लेसली गरबर, ''आईडोलेटरी।''